

❀ ज्ञान-

- 1] याद में रहकर भोजन बनाओ और याद में खाओ तो हृदय शुद्ध हो जायेगा।
 - 2] कम्पलीट प्योर बन गये तो फिर यहाँ नहीं रह सकते क्योंकि हमको शान्तिधाम जरूर जाना है। आत्मा प्योर बन गई तो फिर आत्मा को इस पुराने शरीर के साथ नहीं रहना है।
 - 3] संगमयुग पर डायरेक्ट परमात्म प्राप्ति है, वर्तमान के आगे भविष्य कुछ भी नहीं है इसलिए आपका गीत है जो पाना था वो पा लिया..... इस समय का गायन है अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खजाने में। यह अविनाशी प्राप्तियां हैं। इन प्राप्तियों से सम्पन्न रहो तो चलन और चेहरे से सदा प्रसन्नता की विशेषता दिखाई देगी। कुछ भी हो जाए सर्व प्राप्तिवान अपनी प्रसन्नता छोड़ नहीं सकते।
 - 4] परमात्म प्यार के अनुभवी बनो तो कोई भी रूकावट रोक नहीं सकती।
-

❀ योग-

- 1] तुम यहाँ बैठे हो तो भी बुद्धि में यह याद करना है कि हम वापिस जाते हैं फिर सतोप्रधान देवी-देवता बनते हैं।
 - 2] बाप को वरसे को याद करो। याद करते-करते अथाह सुख पायेंगे। कल-क्लेश, बीमारी आदि जो भी हैं सब छूट जायेंगे। तुम 21 जन्मों के लिए निरोगी बन जाते हो। कल-क्लेश मिटें सब तन के, जीवनमुक्ति पद पाओ। गाते हैं परन्तु एक्ट में नहीं आते हैं।
 - 3] बाबा ऐसे भी नहीं कहते यहाँ बैठकर बाप को याद करो। नहीं, चलते, फिरते, धूमते शिवबाबा को याद करना है। नौकरी आदि भी करनी है। बाप की याद बुद्धि में रहनी चाहिए।
-

❀ धारणा-

- 1] मीठे बच्चे— याद में रहकर हर कर्म करो तो तो अनेकों को तुम्हारा साक्षात्कार होता रहेगा।
 - 2] बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहो। शरीर निर्वाह के लिए धन्धा आदि तो करना ही है। जिस्मानी विद्या भी पढ़नी है। बाकी जो टाइम मिले तो सर्विस के लिए ख्याल करना चाहिए— हम औरों का कल्याण कैसे करे?
 - 3] कितना भी धन्धा आदि हो, गृहस्थ व्यवहार में रहते भी कमाई करते रहना है। इसमें मुख्य बात है पवित्रता की। प्योरिटी है तो पीस-प्रासपटी है।
 - 4] शिवबाबा को याद करते बनायेंगे तो बहुतों का कल्याण हो सकता है। उस भोजन में ताकत हो जाती है इसलिए बाबा भोजन बनाने वालों को भी कहते हैं शिवबाबा को याद कर बनाते हो? लिखा हुआ भी है शिवबाबा याद है? याद में रहकर बनायेंगे तो खाने वालों को भी ताकत मिलेगी, हृदय शुद्ध होगा।
-

❀ सेवा-

- 1] चित्र हाथ में हो। रघुनाथ का काला चित्र भी हो, गोरा भी हो। कृष्ण का वा नारायण का चित्र गोरा भी हो, काला भी हो। भल छोटे चित्र ही हों। कृष्ण का इतना छोटा चित्र भी बनाते हैं। तुम मन्दिर के पुजारी से पूछ सकते हो— इनको काला क्यों बनाया है जबकि असुल गोरा था? वास्तव में तो शरीर काला नहीं होता है ना। तुम्हारे पास बहुत अच्छे गोरे-गोरे भी रहते हैं, परन्तु इनको काला क्यों बनाया है?

[2]

- 2] जगत नाथ वा श्रीनाथ द्वारे में ढेर यात्री होते हैं, तुमको निमन्त्रण भी मिलते हैं। बोलो हम श्रीनाथ के 84 जन्मों की जीवन कहानी सुनाते हैं। भाइयों और बहनों आकर सुनो। ऐसा भाषण और कोई तो कर न सके। तुम समझा सकते हो यह काला क्यों बने हैं? हर एक को पावन से पतित जरूर बनना है। देवतायें जब वाम मार्ग में गये हैं तब उन्हें काला बनाया है। काम चिता पर बैठने से आइरन एजड बन जाते हैं। आइरन का कलर काला होता है, सोने का गोल्डन, उनको कहेंगे गोरे। वही फिर 84 जन्मों के बाद काले बनते हैं। सीढ़ी का चित्र भी जरूर हाथ में हो। सीढ़ी भी बड़ी हो तो कोई भी दूर से देख सकेंगे अच्छी रीति। और तुम समझायेंगे कि भारत की यह गति है। लिखा हुआ भी है उत्थान और पतन।
- 3] बच्चों को सर्विस का बहुत शौक होना चाहिए। समझाना है यह दुनिया का चक्र कैसे फिरता है, गोल्डन एज, सिलवर एज, कॉपर एज..... फिर यह पुरुषोत्तम संगमयुग भी दिखाना है। भल बहुत चित्र नहीं उठाओ। सीढ़ी का चित्र तो मुख्य है भारत के लिए। तुम समझा सकते हो अब फिर से पतित से पावन तुम कैसे बन सकते हो। पतित-पावन तो एक ही बाप है। उनको याद करने से सेकण्ड में जीवनमुक्ति मिलती है।
-